वं. २८

❀ अनन्य रसिक सम्राट् श्रीमदग्रदेवाचार्य्यायनमः ❀

रसिकानन्य कुल भूषण श्रीमत्कृपानिवासस्वामिनेनमः

रसिकाचार्यवर्य अनन्त श्रीविभूषित

स्वामी श्रीयुगलानन्यशरण जी महाराज

के

वंशावतंश रसिक शेखर पण्डित प्रवर

स्वामी श्रीजानकीवरशरणजी महाराज

के

पाद पद्म परागाश्रित रसिकान्य

पं० श्रीस्वामी सीताकान्तशरणजी महाराज

के

गुरुधौली स्थानाधिपति रसिक कुल भूषण

स्वामी श्रीसियारामशरणजी महाराज

कृत

कुंडलिया विलास

प्रकाशकः –

भक्तवर्यः–श्रीकमलाशरणजी

सब्जी मंडी, कानपुर।

वि० सं०२०२३] श्रीतुलसी जयन्ती [प्रथम संस्करण ५००

❀ श्री सद्गुरु चरण कमलेभ्यो नमः ❀

❀ अनन्य रसिक सम्राट् श्रीमदग्रदेवाचार्य्याय नमः ❀

❀ रसिकानन्य कुल भूषण श्रीमतेकृपानिवास स्वामिने नमः ❀

❀ श्रीमतेयुगलानन्यशरणायनमः । श्रीमन्मारुतनन्दनायनमः ❀

❀ सर्वेश्वर्यै श्रीमत्यैचन्द्रकलायै नमः ❀

❀ नित्य निकुंजविहारिणी विहारिणौ विजयेते ❀

॥ कुण्डलिया विलास ॥

❀ मंगलाचरण ❀

जय जय श्यामा श्याम जय जय सद्गुरु कपिराज ।
अग्र सुकृपा निवास जय चन्द्रकला सिरताज ॥
चन्द्रकला सिरताज भाव रसराज प्रदायिनि ।
सिय-पिय मेल कराय भक्ति भीनी अनपायिनि ॥
रीझि बिकाने ताहि कर गावत हैं गुन ग्राम ।
जय जय पूर्वाचार्य वर जय जय श्यामा श्याम ॥ १ ॥

सीख सीख शुचि दीन गुरु तिलक छाप उर माल ।
महा मन्त्र युग बीज वर हिय विलसत सिय लाल ॥
हिय विलसत सिय लाल व्याल विष काल विनासी ।
रंग महल सुख चहल टहल शुभ महल प्रकासी ॥

परम उदार अहेतुकी श्रवण सुना दृग दीख।
सद्गुरु सुपद सरोज रज मिली "माधुरी" भीख ॥ २॥

पास बसे गुरुदेव के नसे सकल भव त्रास।
मंजुल मंगल मोद नित मिटै जगत की आस॥
मिटै जगत की आस रास रस सहज प्रकाशै।
मोह अज्ञता तिमिर दोष दुख अबसि विनाशै॥
जैसे जल बिन मीन को कतहूं नहीं सुवास।
तैसे "मधुरी" दीन को सद्गुरु शरण सुपास ॥ ३॥

पाल्यो पोस्यो प्यार से सद्गुरु प्रेम बढ़ाय।
अब कस बैठ्यो मौन ह्वै "मधुरी" बदन छिपाय॥
मधुरी बदन छिपाय मधुर मृदु हँसि हँसि बोलो।
हिय अन्तर जो होय आस सिगरी सो खोलो॥
करुणा सिन्धु गँभीर दोष दासन सुनि टाल्यो।
पालो पन पहिचान प्रणत पूरब प्रति पाल्यो॥ ४॥

पलिये पन पहिचान के पेखि पुरानी प्रीति।
प्रबल प्रेम प्रगटाइये परम पुनीत प्रतीति॥
परम पुनीत प्रतीति प्रदायक पाठ पढ़ावो।
पीर प्रहारक पुष्ट प्रमाणित पत्र पठावो॥
पामर पतित प्रवीन पीन पापन को दलिये।
प्यार पियूष पिलाय प्राण प्यासे को पलिये॥ ५॥

सच्चा सद्गुरु नाम है कच्चा सब संसार।
रच्चा मन धन धाम में गच्चा सहत गँवार॥
गच्चा सहत गँवार नरक को भारी खच्चा।
परे परे पछिताय पुरुष पामर पशु पच्चा॥
फँसे फिकिर फरफन्द मन्द उल्लू के बच्चा।
'मधुरी' पूरण काम नाम सद्गुरु को सच्चा॥ ६ ॥

तुलसी एक दिन वे रहैं माँगे मिलै न चून।
कृपा भई गुरुदेव की लोचई दूनौं जून॥
लोचई दूनौ जून सून नहि कौनिउ ओरा।
दिशि अरु विदिशि सु जाँव सुखी सब ठौरहिं ठौरा॥
गुरु प्रभाव प्रत्यक्ष पेखि "मधुरी मन हुलसी।
साखी वेद पुराण बात जो भाषी तुलसी॥ ७ ॥

※ अनन्य रसिक सम्राट् श्री अग्रस्वामी विनय ※

विनती सुनिये अग्रजू पिछली प्रीति पिछानि।
बिलग न कीजै किंकरी कानि कृपा की मानि॥
कानि कृपा की मानि आपनो जानि जियाई।
चितवो चित हित लाय बैठि चुप चाप चियाई॥
सद्गुरु समरथ स्वामि शरण में कीन्हो गिनती।
नाता दृढ़ हठ ठानि करे "मधुरी" प्रभु विनती॥ ८ ॥

विनती सुनि गुनि मम विपति करुणा रस उमगाय।
दया वीर सौशील्यता दीजै दृगन दिखाय॥
दीजै दृगन दिखाय हरौ मम ग्लानि उदासी।
सुखी सुपासी होय "माधुरी" महल खवासी॥
रहै न नाम निशान नेक शत्रुन की गिनती।
शाहन्शाह अनन्य करै तुम्हरो प्रभु विनती॥ ९॥

भक्ति भाव एकौ नहीं बिनवौं क्या मुख लाय।
छमा छोह छाँड़ो नहीं अग्र लेहु अपनाय॥
अग्र लेहु अपनाय बाँह बारक गहि लीजै।
निरहेतुकी सुप्रीति नीति पन पालन कीजै॥
"मधुर मंजरी" मन्द मति युक्ति उक्ति नहिं शक्ति।
मुक्ति भुक्ति याँचौं नहीं देहु कमल पद भक्ति॥ १०॥

कीजै कृपा कृपायतन करत टेर भई बेर।
अधम अपावन समुझि कै बैठे हौ मुख फेर॥
बैठे हौ मुख फेर फेर पीछे पछितैहौ।
धवल सुयश स्वच्छन्द चन्द में दाग लगैहौ॥
सपदि सँभारि उबारि खवासो दोउ की दीजै।
रसिक अनन्य नरेश कृपा "मधुरी" पर कीजै॥ ११॥

दीजै दृष्टी दिव्य द्युति दम्पति देश दिखाय।
अग्र सु प्रभा प्रकाश बिनु तिमिर पटल नहिं जाय॥

तिमिर पटल नहिं जाय रूप आतम नहि दरसै।
परमातम परमेश लेश बातहुँ नहि परसै॥
अग्रस्वामि सुख सिन्धु बिन्दु अनुकम्पा कीजै।
याचत सुपद सरोज बिरज रज 'मधुरी' दीजै॥ १२॥

अग्र अनन्य नरेश शुचि अग्र स्वामि रस खान।
द्रवहु दीनता देखि दिल दीजै दर्शन दान॥
दीजै दर्शन दान दयालु दुखारति दरिये।
शरणागत की आस कृपाकर पूरण करिये॥
निबहो नेह सु "माधुरी" निपट नीच लखि उग्र।
रीझत खिन्न प्रपन्न पर चित प्रसन्न को अग्र॥ १३॥

अपराधी 'मधुरी' घनी सब अवगुण की खानि।
तुम शुचि संत अहेतुकी पतित उधारन बानि॥
पतित उधारन बानि अपावन पावन करता।
शीलसिन्धु गंभीर भीर भव पीर के हरता॥
कलुषी कामी क्रूर कलंकी कुटिल उपाधी।
रसिक नृपति श्री अग्र तजत नहि जन अपराधी।१४॥

अपराधी पर पातकी सब पापिन सिरमौर।
गुण ग्राहक गुण ग्राम तजि और ठौर नहि दौर॥
और ठौर नहि दौर गौर कीन्हीं मन माहीं।
निरखत नाहीं नेक नयन निज नेह निबाही॥

'मधुरी' मन्द मलीन मोह माया मति व्याधी।
रसिक राज शिरताज तजत नहि जन अपराधी ॥१५॥

अपराधी मैं स्वामि नित नेह बिबाहन हार।
कूर कृतघ्नी किलविषी करत न कवल करार।
करत न कवल करार रहत माया में भूले।
ताते सहत अनेक बिबिधि बिधि के त्रय शूले॥
'मधुरी' कीन विचार समुझि चित में चुप साधी।
रसिक शाह शिरताज तजत नहिं जन अपराधी॥ १६

अपराधी अविचारता अपकारी अघ ऐन।
उपकारी तुम जलद ज्यों 'मधुरी मंगल दैन॥
मधुरी मंगल दैन रूप तीरथ तर पावन।
अखिल अमंगल मूल शूल कलि कलुष नसावन॥
नेम प्रेम सुख च्देम हेम सम झनक अबाधो।
अग्र स्वामि महराज तजत नहिं जन अपराधी ॥१७॥

अपराधी अघ अवगुणी जानि तजत सब कोय।
पूरब प्रीति पिछानिबो पंडित कोई होय॥
पंडित कोई होय सकल स्वारथ में राते।
होत विषम सम सदा एक रस रहत न ताते॥
अधम अपावन नीच ग्रसित नित आधो व्याधी।
'मधुरी' अग्र सु देव तजत नहिं जन अपराधी॥ १८॥

मधुरी वर्म कुकर्म को पहिरे शर्म को बात।
अग्र रसिक सम्राट् असि ज्ञान चर्म विख्यात ॥
ज्ञान चर्म विख्यात परम पावन को दंडा।
तीव्र धारना बान बिनासत पाप पखंडा ॥
गर्म नर्म नत होत शरण जन सबकी सुधरी।
जिय में मर्म पिछान भर्म भागत मन 'मधुरी' ॥ १६ ॥

आपन आपन कहि मरे आपन भये न कोय।
आपा अरपन अपि करौ जो प्रिय आपन होय ॥
जो प्रिय आपन होय लोक परलोक सुधारै।
भव--भय देय भगाय भान सत रूप सँवारै ॥
अग्र राज शुचि स्वामि विहाय कहौ केहि थापन।
'मधुरी' देखु विचार कोई नाहीं जग आपन ॥२०॥

रसिक राज सम्राट शुचि 'मधुरी' त्रिभुवन जोउ।
अग्रराज सम को भयो मोहि बतावहु कोउ॥
मोहि बतावहु कोउ रसिक रसराज उपासी।
ललित लड़ैती लाल केलि रस कुंज विलासी॥
स्वक्रिया रस संबंध तत्सुखी परम प्रधानी।
चन्द्रकला वपु धरयो अग्र उपमा नहिं आनी ॥२१॥

रसिकअनन्य नरेश की तुलना तुली न जाय।
परमाचारज सहचरी प्रगटी भूतल आय॥

प्रगटी भूतल आय धार रसराज बहाई।
नित अनादि सम्बन्ध प्रगट रसिकन दरसाई॥
जिनकी मया कटाक्ष युगल चित चोर हरन मन।
निवसत मानस कुंज माँझ महलो परिकर गन॥२२॥

❋ रसिकराज श्री कृपानिवास वन्दना ❋

वन्दौं कृपानिवास पद द्वन्द रहित सुख कंद।
काम कलह कलि के कलुष कटत सकल भव फन्द॥
कटत सकल भव फन्द रसिक जन आनँद पाते।
माते मंजु विनोद सु ताते गुन गन गाते॥
पीते प्रेम पराग रंग राते सु मलिन्दौं।
"मधुरी" पुनि पुनि पुलकि परम पद पावन वन्दौं।२३

कीजै संसृत समन दुख आवा गमन नसाय।
पद--पराग अनुराग सुख अधिकाधिक सरसाय॥
अधिकाधिक सरसाय रंग रस रहस अबाधी।
मिटै जिया की जरनि जगत की जौन उपाधी॥
सिय-पिय रसिक अनन्य मोहि माँगे वर दीजै।
कृपानिवासी तनक कृपा 'मधुरी' पर कीजै॥२४॥

कृपानिवासो लखहु ना मम ऐगुण की ओर।
गुण गाहक विरदावली धवल नवल यश तोर॥

धवल नवल यश तोर लोक त्रिभुवन दसचारी।
महा अपावन नीच अधम तर अधम उधारी॥
हौं सीदत दिन रात आयु छिनहीं छिन छीजै।
छमा दान सनमान कृपा "मधुरी" पर कीजै॥२५॥

करिये विगत विषाद सब विषय विषमता खोय।
भरिये मोद प्रमोद उर "मधुरी" खुश खुशबोय॥
मधुरी खुश खुशबोय पाय मधुकर मन मोहै।
सहजानन्द सँभारि रूप रस सुख सन्दोहै॥
रंग महल दै वास विरह की तपन सु हरिये।
कृपानिवासी बाँह पकरि मोहिं सिय पग धरिये॥२६॥

रसाचार्य श्री युगलानन्यशरणजू की वन्दना।

श्रीमद्युगलानन्य के चरण हरण भव फन्द।
पुनि २ नमत सु 'माधुरी' रहत सदा निरद्वन्द॥
रहत सदा निरद्वन्द अभय भय कौनिहुँ नाहीं।
करुणा कृपा सुशील आदि गुण गण की छाहीं॥
त्रिविधि ताप व्यापै नहीं तनक सु तन तेहि हीय जू।
सुमिरौ सुरति समेटि कै श्रीमद्युगलानन्य जू॥२७॥

पालौ युगलानन्यजू सुयश सुधाकर पूर।
स्रवत सुधा करुणा कलित शुचि सुवास करपूर॥

शुचि सुवास कर पूर पास अनयास प्रकासै।
शरणागत की त्रास दोष दुर्वास बिनासै॥
पीन पातकी दीन दुखी लखि कै जनि टालौ।
रसाचार्य सुठि आर्य सदा 'मधुरी' प्रति पालौ॥२८॥

करिय कानि रस खानि जू, शरण गहे की मानि।
हानि हमारी है नहीं तुम्हरी सब बिधि हानि॥
तुम्हरी सब विधि हानि करहिंगे सब उपहासी।
कहाँ गये रस खानि करैं "मधुरी" निज दासी॥
मेटि कलंक कुवाद विमल यश त्रिभुवन भरिये।
युग अनन्य रसखानि बाँह गहि दासीं करिये॥२९॥

करिये दया दयालुता दरसावो दुख देखि।
तरसावो जनि माधुरी चरी आपनी लेखि॥
चरी आपनी लेखि हिया हरदम हरसावो।
मंजुल मंगल कंद बुन्द की झरी लगावो॥
अरि दल आस जवास सघन दल मूल उखरिये।
युग अनन्य रसिकेन्द्र कृपा 'मधुरी' पर करिये॥३०॥

❋ कवित्त ❋

रसिकाधिराज श्री युगल अनन्य शरण त्रिविधि कुताप जीव तारन तरन्य भे। ध्यान धारना धरम धारक

धुरीन ध्रुव नाम रूप लीला धाम ललित अनन्य भे ॥
सरस शृङ्गार सार के अगार अग्रगण्य रसिक समाज माहिं
"मधुरी" सु मन्य भे। सरल स्वभाव स्वच्छ सेवक सुरुचि
पाल परम दयाल धेय धार धरा धन्य भे। ३१॥

॥ सर्वेश्वरी श्री चन्द्रकला विनय ॥

प्रभा नन्दिनी कंज पद बन्दौं बारम्बार।
'मधुर मंजरी' सुमति प्रद कुमति निवारन हार॥
कुमति निवारन हार परा प्रेमा प्रगटावन।
रसिकन संग उमंग रंग रस भाव बढ़ावन।
सिय सिय-पिय सिरताज प्रिये सुख सीम कन्दिनी।
चरण-कमल अनुराग देहु श्री प्रभा-नन्दिनी ॥३२।

चन्द्रकला मम स्वामिनी सब सखियन सरदार।
रसाचार्य रस दायिनी रसिकन रस दातार॥
रसिकन रस दातार श्री सर्वेश्वरि प्यारी।
युगल खवासी देति जानि महलो अधिकारी॥
नित्य निकुंज विहार रस पिय प्यारी रति भीन।
प्यारी के सुख में सुखी तत्सुख परम प्रवीन ॥३३॥

कल्याना कर कामदा कलिमल नासन हार।
पावन को पावन परम धर्म बीज सुख सार॥

धर्म बीज सुख सार पाथ पर पद पथ चारी।
चन्द्रकला प्रिय नाम जपत त्रिपुरारि मुरारी॥
कलपद्रुम सुठि 'माधुरी' रसिक सजीवन प्रान।
बिबसहुँ आवत जासु मुख होत तासु कल्यान ॥३४॥

सिरज्यो नहीं विरंचि जग अपर न ऐसो रूप।
देखत नहीं अनूप छवि अन्ध परे तम कूप॥
अन्ध परे तम कूप न भासत भानु उजेरे।
यथा कूप मण्डूक बृथा ही टर टर टेरे॥
सूकर स्वान समान जियत 'मधुरी' नर खर ज्यों।
प्रभाललो नहि रुचति ताहि बिधिना कत सिरज्यो।३५

आराधें अलि शशिकला शिव विरंचि हरि शेष।
गिरा गौरि गणपति गरुड़ काग भुसुंडि दिनेश॥
काग भुसुंडि दिनेश व्यास नारद सनकादी।
लोमस कुम्भज आदि अपर परमारथ वादी॥
बीस चार औतार शुकादिक निसि दिन साधें।
महल 'माधुरी' टहल मिलै अलि ह्वै आराधें ॥३६॥

मूरति मृदु मम स्वामिनी चन्द्रकला अलि ख्यात।
वार-बार उत्साह सजि चितवत चित ललचात॥
चितवत चित ललचात हृदय से रहत न न्यारी।
सिय प्यारी की प्रान पलक पलहूं नहिं टारी॥

'मधुरी' दोउ कर जोरि यही मन माँहि विसूरति।
लगो रहै दिन रैन सुमति रति मन रस मूरति ॥३७॥

मेरी गुन गन सागरी चन्द्रकला सब तौर।
चरण शरण तव छाँड़ि कै अनत नहीं कहुँ ठौर॥
अनत नहीं कहुँ ठौर कृपा करुणा कल कीजै।
युगल विलास प्रकास महल 'मधुरी' रस दीजै॥
लीजै मोंहि अपनाय जानि लघु तर लघु चेरी।
तुम सब भांति समर्थ स्वामिनी सब विधि मेरी।३८।

॥ श्री लाल जन्म बधाई ॥

चन्द चारु रघुपति भये सुर गण कुमुद समान।
चख चकोर रसिकन सुखद करत सुछवि रस पान॥
करत सु छवि रस पान ताप त्रय बिधि सब छूटी।
हरसैं बरसैं सुमन गान कृत बिबुध बधूटी॥
नचैं अप्सरा मुदित मन त्रिभुवन परमानन्द।
अवध अवध सुख 'माधुरी' प्रगटे रघुकुल चन्द ॥३९

बाज आज रसराज सुनि हुलसि उठे ऋतुराज।
मनहुँ दुन्दुभी मदन की अनुपम सरस अवाज॥
अनुपम सरस अवाज गान करतीं पिक बयनी।
नाचैं नवला नाज नये मृग शावक नयनी॥

मंगल कलश बिचित्र ध्वज तोरण मंगल साज ।
'मधुर मंजरी' अवध में अनँद बधाई बाज ॥४०॥

❋ श्री जनकलली–जन्म बधाई ❋

अनँद बधइया मोदमय बाजै नृप के द्वार ।
जन्मी जग हित जानकी सकल सुकृत को सार ॥
सकल सुकृत को सार सुनैना गोद खेलावैं ।
पुनि पुनि सिय मुख चूमि ललकि लखि कंठ लगावैं ॥
दान मान परितोष लहत सब लोग लुगइया ।
'मधुरी' पुलकित प्रेम उमँगि उर अनँद बधइया ॥४१

भली बधाई बाजती भरि रस रंग उमंग ।
सरसत परमानन्द निधि बरसत सुमन तरंग ॥
बरसत सुमन तरंग साजि सब मंगल लावैं ।
गावैं सोहिलो नारि निरखि सिय नैन जुड़ावैं ॥
गली गली सुख थली उमगि शुचि सरिता सु चली ।
'मधुरी' सुखमा खानि मंजु मूरति भई सुभली ॥४२॥

॥ सर्वेश्वरी श्रीचन्द्रकला–जन्म बधाई ॥

आज बधइया नृपति गृह सरस बजै अभिराम ।
सुकृत अवधि शशिभानु निधि प्रगटीं सुता ललाम ॥

प्रगटी सुता ललाम काम दायक मनसा के।
गृह गृह मंगल साज सजे सब ध्वजा पताके॥
मंगल कलश सुद्वार प्रति चौक चारु छवि छाज।
"मधुरी" प्रमदा प्रेम मय प्रमुदित गावैं आज॥४३॥

भानुलली कल कमल की कलीं भली रस धाम।
प्रगटी मिथिला गन्ध सर सुखमा अति अभिराम॥
सुखमा अति अभिराम श्याम मधुकर दृग लोभी।
पाय परा अनुराग वास 'मधुरी' मन छोभी॥
जीवन प्राण अधार मम सुख को सुखप्रद थली।
सकल सुमंगल मोद मय मूरति भानुलली॥४४॥

फूल बधाई लै चलीं अली कली सी फूल।
फूल उठीं हिय कमल सी चन्द्रप्रभा लखि फूल॥
चन्द्रप्रभा लखि फूल फूल फूल्यो अँग अंगन।
फूल उठ्यो सुर-लोक फूल बरसैं सु उमंगन॥
फूल फूल याचक रचैं देत दान नृप फूल।
फूल फूल गावैं सखी नाचैं "मधुरी" फूल॥४५॥

॥ बना-बिलास ॥

साज सुहावन साजि कै सुबह शाम सरसाय।
घूमैं मिथिला गलिन में बीर सुवेष बनाय॥

वीर सु वेष बनाय तीर तकि तकि दृग मारै।
बालन बेधत हीय हाय घायल करि डारै॥
नेक निगाहें निरखिये करि नय नवर२ न‌ाज।
'मधुरी' अदा अजूब यह बसी सोहावन साज॥४६॥

बाँके रसिया 'माधुरी' छाके छवि में छैल।
नाके बिच डाके परैं करैं गैल में फैल॥
करैं गैल में फैल नये २ ढँग दरसावैं।
नवलन बेधत हीय जाल छवि को फैलावैं॥
हँसत फँसत चित नसत कानि कुल रहत न ढाँके।
तार्के तिरछी तकनि तीर कैवर वर बाँके॥४७॥

चोखि सु चितवनि चारु चख चतुर चलाँके चोर।
बरबस मन हरि लेत हैं हेरत जाकी ओर॥
हेरत जाकी ओर कानि कुल नेक न राखैं।
फेरत नहिं चित बित्त यतन कोई करि लाखैं॥
मृगा मार झख खंजनहिं गंजन शान अनोखि।
अंजन रंजन 'माधुरी' कंजन मंजु सु चोखि॥४८॥

रामचन्द्र छवि देखि कै मनसिज सरसिज हीन।
अतनु भयो तन में दुखे जल में वासा लीन॥
जल में वासा लीन छीन तन कंटक खोरे।
देखि मयंक सशंक सकुचि पुनि पुनि मुख मोरे॥

उपमा देत न "माधुरी" व्योम बसे घनश्याम।
सुख सुखमा के धाम लखु अनुपम छवि श्रीराम ॥४९

क्रीट कलाकर कोटि को प्रभा प्रभाकर छीन।
छवि छावत दृग 'माधुरी' उपमा सकल बिहीन ॥
उपमा सकल विहीन मन्द मति कहत बनैना।
तम तम तोम तुषार दुःख तन को सो गनै ना ॥
हित जनको विश्राम प्रद महा मोद मय सीट।
भाल विशाल सुलाल के राजत सुन्दर क्रीट ॥५०॥

मुकुट छबीले छैल को छटा छिटकि छहराय।
ललकि ललकि लोचन लखैं लपकि लपकि लपटाय ॥
लपकि लपकि लपटाँय यथा चुम्बक अरु लोहा।
नर नारिन की कौन निरखि मनसिज मन मोहा ॥
'मधुरी' मधुर मयंक छवि पीवत दृगन सुपुट।
त्रासन तम नासन सुभग शीश सुशोभित मुकुट ॥५१

कारी कारी रस भरीं चिलकदार घुँघरार।
मानौ सुखमा सुभग सर सुन्दर ललित सेवार ॥
सुंदर ललित सेवार मार मन बिवस सु करनी।
छलकत छटा अजूब खूब पन्नग मद हरनी ॥
सिया राम छवि जाल लाल जनु स्वकर सँवारीं।
फँसी 'माधुरी' मोन कढ़ी नहीं नेक निकारी ॥ ५२ ॥

कान सुझुमका झूमते कुंडल युग ताटंक।
रहत सशंकित शुक्र शशि यह तौ सदा अशंक॥
यह तौ सदा अशंक रंक जन मन के पोषक।
भक्ति भाव मुद दैन प्रेम परमिति पर तोषक॥
जनु युग मंजुल मन्त्रि वर 'मधुरी' करि अनुमान।
जीव अपावन दीन की अरज सुनावत कान॥५३।

कुण्डल अलकैं उरझिकै झलकि रहीं मुखचन्द।
ललकि ललकि जनु ब्यालशिशु पियत अमीरसबुन्द।
पियत अमी रसबुन्द मलिन्द मनहुँ झख झगरैं॥
फँसी मीन छवि फन्द प्रेम पन्नग जनु पकरैं॥
कोटि काम कमनीय सदन सुखमा मुख मंडल।
'मधुरी' परम प्रकाश दिपत दुहुँ दिशि कलकुंडल।५४

लसत लाल के भाल शुचि तिलक कलित सिरताज।
बाँक कतारा ललित लर मोतियन कलँगी छाज॥
मोतियन कलँगी छाज अलक झलकैं अलि को हैं।
गोल कपोल अमोल लोल कुंडल श्रुति सोहैं।
भृकुटी धनुष सुनैन सर पैन मैन मन धसत।
'मधुरी' शोभासदन छवि बदन सुसरसिज लसत॥५५

अँखियाँ छवि अँखियां लखीं बरसत रस जनु मेह।
सजन सजाती समुझि कै सरस्यो सरस सनेह॥

सरस्यो सरस सनेह कानि कुल एक न रखियाँ।
बरबस परबस भईं शहद की सनो सी मखियाँ॥
समुझावत शुभ सीख सयानी सँग की सखियाँ।
नहिं मानत 'मधुरी' बात एक मदमाती अँखियाँ॥५६

बड़ी बड़ी अँखियाँन में कजरा कलित सँवार।
मानहु मनसिज पैन सर सैफ सान खर धार॥
सैफ सान खर धार राग अनुराग नसीली।
गरबीली गुण गजब रंग रस भरी रँगीली॥
कढ़त नेक काढ़ी नहीं रैन दिना उर गड़ी।
मीन मृगा की 'माधुरी' छीन लियो छवि बड़ी॥५७॥

नैना लागैं जाहि उर घाव करैं भरि पूर।
ऊपर प्रगट न देखिये भीतर चकनाचूर॥
भीतर चकनाचूर हाय उठतीं हिय हूकैं।
मदन मरोरत जार विषम विरहा की लूकैं॥
दहत रहत दिन रैन परत नाहीं चित चैना।
कढ़त नहीं मुख बैन लगै जब 'मधुरी' नैना॥५८॥

नयना सर विष रस भरे चुभत हीय बे पीर।
कसक करेजे करत हैं धरत नहीं मन धीर॥
धरत नहीं मन धीर शरीर सु थर थर काँपै।
लहर चढ़त अति जोर जहर अँग २ प्रति व्यापै॥

'मधुरी' कल नहिं परत जाउँ कहँ सतवत मयना।
करकत है दिन रैन जुलुम जालिम सर नयना॥५६॥

नैन मैन मद रस भरे सैन पैन असि धार।
लगत तनक जाके हिये करत सुघोर चिकार॥
करत सुघोर चिकार घाव नहिं सूझै तन में।
भूलि जात घर बार और नहिं भावै मन में॥
लटपट चलत सु 'माधुरी' अटपट बदत सुबैन।
निठुर गजब जुलमी जबर अजब शिकारी नैन॥६०॥

बाल सुहावन सुखद सुठि सुरुचि सरस अनमोल।
सरसावत 'रस माधुरी' करत सुचित्त अडोल॥
करत सुचित्त अडोल काम के कामिनि को हैं।
योगी शिव सनकादि सती सुर मुनि मन मोहैं॥
सुन्दर अदा अजूब लखि को न बिक्यो बिन मोल।
अमी स्वाद सीठे लगैं सुनि मीठे वर बोल॥६१॥

धरती धीर न 'माधुरी' लखि मधुरी मुस्क्यान।
मनहुँ मदन मुख म्यान से काढ़ी कठिन कृपान॥
काढ़ी कठिन कृपान करेजे कतल सुकीन्हों।
कातिल है बेपीर फाँसि जुलफन में लीन्हों॥
घायल बाल बिहाल हाल आहैं हिय भरतीं।
जनु माही बिन नीर पीर बस धीर न धरतीं॥६२॥

आयो मिथिला नगर में राम लखन दोउ बन्धु।
कोटि काम कमनीय छवि अति सुखमा को सिन्धु॥
अति सुखमा को सिन्धु अंग अंगन छवि छहरै।
लहरै अदा अजूब निरखि रस बस हिय हहरै॥
लूटन को निधि रंक मनहुँ सिगरे जन धाये।
नृप किशोर चित चोर आज दुलहा बनि आये॥६३।

आये अनुपम वेष धरि जनु सुखमा श्रृङ्गार।
अंग २ छवि 'माधुरी' कोटि मदन मद गार॥
कोटि मदन मद गार कलित कर कंकन राजै।
जामा पीत सुलाल कमर पटुका छवि छाजै॥
जावक जाल विचित्र बाल-मृग मनहिं फँसाये।
माथे मंजुल मौर अजब दुलहा बनि आये।६४।

बनरा वीर विलोकिये बना सुभग सब तौर।
सुन्दर सुमुख सु इन्दु छवि सेहरा सुमन सु मौर॥
सेहरा सुमन सुमौर मंजु दीन्हें दृग कजरा।
उर विशाल मणि माल गरे गज मोतिन गजरा॥
'मधुर मंजरी' कीन स्ववस हमरो तन मनरा।
जनक नगर छवि धाम राम आये बनि बनरा॥६५॥

प्यारी मूरति 'माधुरी' कोटि काम मदगार।
बिनु उपमा सुख सरस जनु तनु धारे श्रृंगार॥

तनु धारे शृंगार जनक--मंडप तर सोहै।
दूल्हो वेष बनाय बीर बरबस मन मोहै।।
बाम काम बस भईं अपनपौ सकल बिसारी।
सिया राम अभिराम धाम छवि मूरति प्यारी ।।६६।।

विधु बदनी बनरी बनी बनरा बारिद वीर।
बसन विभूषण विशद बर विलसत छवि गंभीर ।।
बिलसत छवि गंभीर अलौकिक अद्भुत छाजै।
नखत ग्रहन की पाँति कांति दामिनि द्युति लाजै।।
शोभा सुखमा रूप शील सौंदर्य सु सदनी।
'मधुरी' सुन्दर बना तदपि अधिकी विधु बदनी ।।६७

❋ बसन्त बहार ❋

बने वसन्त रसाल लखु ललित बौर सिरमौर।
जामा जरकस जरद जनु बिलसि रह्यो चहुँ ओर।।
विलसि रह्यो चहुँ ओर सु भूषण फूल घने हैं।
अंग राग अनुराग सु अंग पराग सने हैं।।
नव पल्लव तरु तरुण सुबेलि वितान तने हैं।
सजे 'माधुरी' साज सु आज बसन्त बने हैं ।।६८।।

मनसिज उठ्यो उमंग भरि संग लियो ऋतुराज।
दीन्हीं दुन्दुभि कोकिला मिलन काज रघुराज ।।

मिलन काज रघुराज बाजि किंसुक तरु सोहैं।
रथ रसाल गज वायु अपर पद चर मन मोहैं॥
सेन सजो चतुरंग अंग जनु फूले सरसिज।
भृंग भयो अभिराम 'माधुरी' मानहुँ मनसिज॥६९॥

लाल चले रँग कुंज को अनुज सखा लै साथ।
चलीं लली सँग लै अली बली प्रबल गुण गाथ॥
बली प्रबल गुण गाथ सकल जानैं रस क्रीड़ा।
जिनको हास विलास निरखि रति मानत ब्रीड़ा॥
दोऊ टोल अमोल वर बोलैं बोल कृपाल।
इत उत 'मधुरी' कहत जय सखी सखा सिय लाल।७०

आये खेलन फाग को नर्म सखा रघुवीर।
अपने मुख सों कहत हैं सुनो वीर हम वीर॥
सुनो वीर हम वीर वेष नरवर को कीन्हों।
फाग राग अनुराग लाज सरबस तजि दीन्हों॥
भरे अमित छरछन्द फन्द नहिं जात गनाये।
'मधुरमंजरी' आज सुआल बनि अलि ढिग आये।७१

सखा सखारचो साँच ही सरस सु सुनि वर बैन।
नेम निबाहव नित्य नव कही जो राजिव नैन॥
कही जो राजिव नैन सैन सब नारि भगावैं।
प्रेम प्रीति परितोष पान प्यारे कर पावैं॥

सुन्दर चतुर चलाँक बाँक सु रघुवर मन रखा।
समय सँभारि सुबात कहत 'माधुरी' मृदु सखा ॥७२।

सखी सराहेव सीय को बानीं बिमल बिचारि।
हिलि मिलि के हम सब करैं तव आयसु सिर धारि॥
तव आयसु सिर धारि लाल को बाल बनावैं।
नव शत साजि शृंगार निरखि छवि तारि बजावैं॥
गुन आगरि नागरि नवल प्यारी को रुख रखी।
सिय के परवैं पाँय बिहँसे 'मधुरी' कहि सखी ॥७३॥

मुग्धा मुँह मकरंद के लुब्धा हम सब भृंग।
छकि २ पीवहिं प्रेम से भरि भरि अंग उमंग॥
भरि २ अंग उमंग बात सहजहिं बनि आई।
अबला नामहि अबल सबल सब विधि रघुराई॥
खेलहु फाग सु रंग से तजो सकल दिल दुविधा।
करिहैं काह हमार बाल 'मधुरी' सब मुग्धा ॥७४॥

फागुन रंग रँगीन में रँगीं रँगीली बाल।
चलीं फाग खेलन उमँगि भरि भरि गोद गुलाल॥
भरि भरि गोद गुलाल कोइ कर में पिचकारी।
लीन्हें अतर अबीर गुलावहिं कोई झारी॥
कोइ कुमकुमा अरगजा माल सुपुष्पन सुचुन।
'मधुरी' ताल बजाय देति गारी गुन फागुन ॥७५।

लाल लखो नव बाल सब हँसत सु दै कर ताल।
कर कंचन पिचका लिये झोरी भरे गुलाल।
झोरी भरे गुलाल खड़ी भृकुटी मटकावैं।
अंजन युत नव नैन-मैन सर सैन चलावैं॥
अंग अंग छवि रंग रस सजे सु सुखमा जाल।
फाँसत बरबस 'माधुरी' जनु मराल मन लाल॥७६॥

सिया सहेली हीं सही सुनौ लाल मम बैन।
होय उमंग सुरंग की खेलन को सुख ऐन॥
खेलन को सुख ऐन प्रिया सों विनय सुनावो।
लै आज्ञा रसराज साज रस रंग सजावो॥
सुनि वर बोल अमोल सरस सुखहिं भरि२ हिया।
पियकी रुखलखि 'माधुरी' कहैं सखी जय२सिया।।७७

प्यारी सुनौ सु बैन मम सरस दैन चित चैन।
संग सखा सब रंग रस भरे अंग मद मैन॥
भरे अंग मद मैन जंग रस जीतन हारे।
विकसत बनज विकास वीर वर बाना धारे॥
झोरी भरी अबीर हाथ कुम कुम पिचकारी।
आज सजे सब साज चतुर 'मधुरी' सुन प्यारी॥७८

लाल कहेव हँसि 'माधुरी' सुनौ सकल वर बाल।
अंग अंग फूले बनज नव सुखमा के ताल॥

नव सुखमा के ताल उमंग सुगंध भरे हैं।
चंचल चतुर चलाँक चित्त में चाव खरे हैं॥
छवि छाके बाँके बड़े लीन्हें हाथ गुलाल।
सुनत बैन सुख ऐन के कहैं सखा जय लाल॥७९॥

लाला तुम्हरे हृदय में खेलन को अति चाव।
पै रस रीति कलान को रंग ढंग अँग भाव॥
रंग ढंग अँग भाव भेद नहिं तुम कछु जानौ।
सिय स्वामिनि ढिग जाय पाठ पढ़िके पहिचानौ॥
विनय करौ कर जोरि बेगि बनिकै वर बाला।
खेलन आवो फाग समुझि 'मधुरी' नृप लाला॥८०॥

बाल विनय बानी सुनहु सरस सुखद दै कान।
काम कला कमनीय के कुशल रंग रस दान॥
कुशल रंग रस दान वीर बाँके रण रूरे।
राम रमावत रमण करत सब रस निधि पूरे॥
रमु क्रीड़ा कल धातु को अर्थ समुझि करु ख्याल।
करहु मनन मन तक तजि 'मधुर मंजरी' वाल॥८१॥

बाजत धौंसा धमकि कै मनहुँ मेघ घहरात।
दोउ दिशि रँग पिचका चलैं सावन सा सरसात॥
सावन सा सरसात कामिनी कौंधा चमकैं।
मनहुँ सजल घन श्याम दाम सी सिय जू दमकैं॥

इन्द्र धनुष जनु भौंह निरखि मनमथ धनु लाजत ।
जयति शोर दोउ ओर मोर 'मधुरी' धुनि बाजत ॥८२

फाग साज सजि आज नव अमित सखिन के वृन्द ।
छवि उडुगण के मध्य मँह लसत युगल वर चन्द ॥
लसत युगल वर चन्द परस्पर मिलि सुख लूटैं ।
मारत रंग अबीर अंग लगि कुम कुम फूटैं ॥
तकत सुमुख छवि छकत दृग छन २ नव अनुराग ।
उमँगि उमँगि उर 'माधुरी' खेलि रहे रस फाग ॥८३।

साज आज रसराज सजि फाग राग उमड़ान ।
बाजैं ढोल मृदंग डफ गावैं गजब सुगान ॥
गावैं गजब सु गान शान मनसिज मति विसरी ।
सब समाज भई लाल लाज तन की सब निसरी ॥
अंश धरे भुज "माधुरी" रंग भरे छवि छाज ।
अदा अजब अवधेश की सजे सुरंगी साज । ८४॥

मारी पिचकारी बिहँसि प्रीतम प्यारी ओर ।
भीजि गई सारी सुरँग भई रंग रस बोर ॥
भई रंग रस बोर निरखि सिय जू अनखानी ।
सखियाँ सब रुख पाय गहेव झट सारँग पानी ॥
गाल गुलाल लगाय बाल करि दीन्हीं तारी ।
"मधुरी" नाच नचाय छीन लीन्हीं पिचकारी ॥८५

लाल लाल सब बाल हैं लाल सखा सब लाल।
लाल विभूषण चीर तन लाल २ उर माल ॥
लाल २ उर माल लसे मुख लाल सु बीरा।
लाल तिलक छवि भाल लाल सिर सोहै चीरा ॥
ललकि लाड़िली लाल के गालन मल्यो गुलाल।
हारे रँग सों 'माधुरी' हरषि हजारी लाल ॥८६॥

नाज नजारे नैन के नये नये दरसात।
निरखौ नेह बढ़ाय के नवल सुछवि सरसात ॥
नवल सु छवि सरसात गात सरसिज सुठि फूले।
सुखमा सरस अपार निरखि मनसिज मन भूले ॥
रंग रँगीली नारि नव साजि नवेली साज।
हिलि मिलि होली 'माधुरी' खेलति करि नवनाज ।८७

फाग राग रस रंग में रँगे रँगीले लाल।
छयल छबीले संग सब भरि उमंग नव बाल ॥
भरि उमंग नव बाल लिये कुमकुम पिचकारी।
मलैं सुगन्ध अबीर रंग की चढ़ी खुमारी ॥
प्रीतम प्यारी प्रेम पगि भीजे अति अनुराग।
छकि २ दोऊ 'माधुरी' हँसि हँसि खेलैं फाग ॥८८॥

खेलैं फाग सु प्रेम फँसि फटकि फिकिर फरफन्द।
भरे उमंग सु अंग अँग नव नेही निरद्वन्द ॥

नव नेही निरद्वन्द चन्द मुख चितै चकोरी।
मलैं अबीर सु गाल बाल हँसि २ बरजोरी॥
लपटि झपटि मुख चूमि परस्पर रंग सु रेलैं।
गावत 'मधुरी' तान संग सिय पिय मिलि खेलैं॥८६

बाल सिया रघुलाल सँग खेलि रहीं रँग फाग।
चढ़ेव चाव चित सवन के सरसेव भाग सोहाग॥
सरसेव भाग सोहाग मगन मन भईं नवेली।
प्रीतम श्याम तमाल तरुण तरु लपटीं वेली॥
हँसि हँसि पिय मुख 'माधुरी' लखि२ भईं निहाल।
सुऋतु सोहावन पाय कै खिलीं कमल सी बाल॥६०

सखि सु फाग खेलैं उमगि पहिर सु चीर रँगीन।
झपटि सुमुख रोरी मलीं पियहि बधूटी कीन॥
पियहि बधूटी कीन साजि भूषण कर चूरी।
हरषि २ तृण तोरि 'माधुरी' छवि अति रूरी॥
नाचहिं लाल निहाल बाल बिहँसैं लखि शशि मुखि।
गावैं राग धमार संग मिलि पिय प्यारी सखि॥६१।

रूरे पूरे प्रेम से बँधे चतुर चित चोर।
छूटि सकत नहिं 'माधुरी' यद्यपि प्रबल सजोर॥
यद्यपि प्रबल सजोर शील सुखमा बलशाली।
अद्भुत रहस सुरीति प्रीति सखियन प्रति पाली॥

दान दया विद्यादि खर्ग षट भग शुचि सूरे ।
सुन्दर शोभा धाम राम रघुवर छवि रूरे ॥६२॥

हारि गये रस रारि सों रंग रँगे घन श्याम ।
राम रमावत सबन को परेव बाम सों काम ॥
परेव बाम सों काम बिहँसि नव नाच नचावैं ।
ता थेई ता थेई करैं कोई करतारि बजावैं ।
दै गारी नारी सबै रँग पिचकारी मारि ।
जंग जुरेव जनु 'माधुरी' दंग अनंग निहारि ॥६३॥

गाल गुलाल लगाय के बाल हँसैं दै ताल ।
रंग रँगे रस बस भये रसिक बिहारी लाल ॥
रसिक बिहारी लाल अदा अनुपम नव दरसी ।
चरची चन्द मनोज रँगी मकरन्द कि अरसी ॥
मुग्धा मध्या आदि अलि फँसी अलक के जाल ।
ललकि ललकि उर 'माधुरी' झमकि मलैं मृदु गाल ।६४

श्यामा मृग मद रँग रँगी केशरि रंग सु श्याम ।
हरी हरी 'मधुरी' भई दरसी छवि अभिराम ॥
दरसी छवि अभिराम स्वकर अरसी मुख जोहैं ।
वरण विपर्य्यै जानि परस्पर हँसि २ मोहैं ॥
सुन्दर रूप अनूप चकित चितवत लै नामा ।
खोजि खोजि खुद खोय भान भूली तन श्यामा ॥६५

ब्याह पंचमी मूल मुद रस बसंत सरसान।
रंग पंचमी राग सरि सखिन हृदय उमड़ान॥
सखिन हृदय उमड़ान यमुन प्रीतम सिय गंगा।
मज्जैं रसिका बृन्द पर्व शुभ योग अभंगा॥
लाज दान सब देत लेत 'मधुरी' मन चाहा।
फवित फगुन फल फरे फूल फूले सुख ब्याहा॥६६॥

राजैं राजिव नैन श्याम सिय रतन सिहाँसन।
रवि शशि कोटि प्रकाश दिव्य तर परम हुतासन॥
परम हुतासन तेज संधिनी आदिक शक्ती।
सेवैं सु पद सरोज सदा सेवा अनुरक्ती॥
अह्लादिनी किशोर काम कोटिक रति लाजैं।
परमानन्द सुरूप 'माधुरी' नित्य विराजैं॥६७॥

❋ सुमन बँगला ❋

राज सिहासन सुमन को राजत सुमन सहर्ष।
झालर चँदवा सुमन को बिछी सुमन को फर्स॥
बिछी सुमन को फर्स लगे सुमनन के गमला।
कीन्हें सुमन शृङ्गार खड़ी चहुँकति जनु कमला॥
जँगला बँगला सुमन को कँगला लखि ऋतुराज।
याचत 'मधुरी' दीन ह्वै देत सुमन रघुराज॥६८॥

फूले फूल गुलाब के बेला जुही निवार ।
बने फूल बँगला विविधि झरैं सुगन्ध फुहार ॥
झरैं सुगन्ध फुहार लसैं चहुँदिशि खस टटिया ।
कोमल कमल कि फर्स अमल फूलन की तकिया ।
'मधुरी' मुख अवलोकि एक एकन छवि भूले ।
कीन्हें फूल शृङ्गार मोद मय दोऊ फूले ॥ ६६ ॥

अजब फूल फूले अजब अजब लता लहराय ।
अजब पता तरु कता क्या कलित छटा छहराय ॥
कलित छटा छहराय छबीली छैल सु छाके ।
निरखि परस्पर रूप 'माधुरी' नैन सु थाके ॥
पगे प्रेम रस रंग में रसिक सुरसिया गजब ।
पहुँचे प्रीति प्रदेश में दशा सुदरसी अजब ॥ १०० ॥

❋ सावन झूला—झलक ❋

सावन प्रीतम पाय कै नित प्रति नये उमंग ।
नये नये रंगन रँगी नये अंग नये ढंग ॥
नये अंग नये ढंग नये नित साज सजावन ।
नये नये नित गीत प्रीति नित नये हुलसावन ॥
नये नये नाचैं नाच साँच नये भाव बढ़ावन ।
नये नये सुख साज 'माधुरी' रस सरसावन ॥ १०१

सावन आयो झमकि कै बाढ़ेव सखिन उमंग ।
मनभावन दावन लगीं ललकि ललकि नव अंग ॥
ललकि २ नव अंग संग में झूला झूलैं ।
निरखि निरखि मुखचंद कुमुद सी अँखियाँ फूलैं ॥
कोइ मृदंग बजाय नाज नचि हावन भावन ।
गावन लागीं राग 'माधुरी' मुद मय सावन ॥१०२

सावन सखि गावन लगीं मनभावन के संग ।
पावन सुख छावन लगीं सजि सजि साज मृदंग ॥
सजि सजि साज मृदंग गमक मीड़न की हूकैं ।
लेतीं तान तरान मान कोकिल सी कूकैं ॥
झूलैं झमकि हिंडोर 'माधुरी' मन ललचावन ।
गावन लागीं राग 'माधुरी' मुद मय सावन ।.१०३॥

झूलैं सावन झूलना झमकि झमकि रघुनन्द ।
राग तान सरसात सुख संग सखिन के वृन्द ॥
संग सखिन के वृन्द चन्द कोटिन छवि लाजैं ।
हास विलास बिलोकि अमित मनसिज रति लाजैं ॥
हँसि हँसि झोंकैं पेंग सुमनहीं मन अति फूलैं ।
सजे सुरंगी साज 'माधुरी' सिय पिय झूलैं ॥१०४

झूलि रहे रघुलाल जू लली अली लै संग ।
बरसैं सुख वर वारि शुचि सरसैं नव रस रंग ॥

सरसैं नव रस रंग तरंग सु अंग हिलोरैं।
सजी साज ऋतुराज लाज मनसिज मुख मोरैं।
मन्द मन्द मुसकात दोउ अंश धरे भुज मूल।
निरखैं मुख छवि 'माधुरी' रहे मोद मय भूल ॥१०५॥

भूलैं करि शृङ्गार नव जनक लली रघुराज।
क्रीट मुकुट शिर चन्द्रिका भूषण बसन बिराज॥
भूषण बसन बिराज माल मुक्ता मणि सोहैं।
मनहुँ ब्योम द्युति दाम काम बग पाँति बिमोहैं।
अंश परस्पर धरे बदन 'मधुरी' लखि फूलैं।
मन्द मन्द मुसकाय गाय सावन दोउ भूलैं॥१०६

भूलैं कुंज प्रमोदवन पुंज अली चहुँ ओर।
विलसी सुखमा माधुरी कीधौं निकर चकोर॥
कीधौं निकर चकोर किधौं चपला द्युति घेरी।
कीधौं रती विलास सींव परिखा छवि केरी॥
कीधौं कुमुदिनि फूल मंजु माला कृत फूलैं।
'मधुरी' युगल सुचन्द चन्द मंडल में भूलैं ॥१०७॥

❋ सुन्दरीछन्द ❋

नव श्याम घटा पै छटा चमकै जनु दिव्य सुदामिनि की छवि छावै। रस प्रेम सुधा बरसै 'मधुरी' हरसैं मन

मोर मनोज लजावैं ॥ सरि कूल कदम्ब सुफूलि रहे अनुकूल सखी सब सावन गावैं। युग चन्द अमन्द सु झूलि रहे जनु चन्द्र हिंडोल सुचन्द झुलावैं ॥१०८।

॥ सुन्दरीछन्द ॥

नभ झूलन बीच लसैं 'मधुरी' मुख कोटि मयंक कि भानु पसारा। दृग कंज कुमोदिनि फूलि रहे मन कोक अशोक चकोर कुमारा ॥ कवि की मति खोजि थकी उपमा दिन रैन कहै किमि मन्द गँवारा। युग सन्धि प्रभा पसरी सुखमा सखियाँ चमकैं दमकैं जनु तारा ॥१०९॥

सावन साज सुसाजि अँग हरे हरे रघुबीर।
हरे हरे भूषण जरे हरे हरे तन चीर ॥
हरे हरे तन चीर सखी सब सजे सुहावन।
पावन प्रीति बढ़ाय लगीं सब झमकि झुलावन ॥
गावन लागीं गीत मीत मानस हुलसावन।
'मधुरी' विमल बहार सुरस बरसावन सावन ॥११०।

सारी सखी समाज सुठि हरी हरी दरसात।
विपिन हरे शोभा भरे लता फूल तरु पात ॥
लता फूल तरु पात हरी सुखमा महि छाई।
हरे चरैं नव मोर कीर तन काम बनाई ॥

झूलत युगल किशोर हरित छवि न्यारी न्यारी।
'मधुरी' जामा झीन झलामल झलकै सारी ॥१११

झूलैं हरित हिंडोलना हरित खम्भ मणि डोर।
हरित सखी चहुँदिशि लसैं हरित कीर बन मोर॥
हरित कीर बन मोर हरित सुखमा महि छाई।
हरित तरुण तरु पात मदन बिरची फुलवाई॥
हरित कुँज सब साज हरित 'मधुरी' छवि खूलैं।
हरित भरित नव रंग संग प्यारी पिय झूलैं। ११२

सुमन कुंज बेली सुमन सुमन सु तने बितान।
सुमन जाल झूलन सुमन झूलत जानकि जान॥
झूलत जानकि जान सुमन भूषण अँग साजे।
सुमन चन्द्रिका कीट सुमन सिर पेंच बिराजे॥
सुमन माल उर में लसै फँसै 'माधुरी' सुमन।
विकसे बनजारुन सरन बरन बरन के सुमन ॥११३॥

अंग २ छहरात छवि सजल जलद तन श्याम।
कटि पट पीत सु दामिनी उर मोतियन की दाम॥
उर मोतियन की दाम मनहुँ बग पंक्ति बिराजै।
इन्द्र धनुष युग भौंह देखि मनमथ मति लाजै॥
मन भावन सावन बने 'मधुरी' लखत उमंग।
विविधि सुमन फूले सुभग भूषण भूषित अँग ।११४

प्रिया प्राणनी प्राण प्रिय उरझि भये एक रंग ।
हरे हरे सखियाँ कहैं 'मधुरी' बढ़त उमंग ॥
'मधुरी' बढ़त उमंग अंग अनुपम छवि छलकै ।
प्यारी तन में पीय पिया प्यारी तन झलकै ॥
एक रूप वय रंग 'माधुरी' एकहिं सुजिया ।
नयन बयन में रमे रसिक रस बस पिय प्रीया ॥११५

प्यारो प्रीतम परस्पर बिहँसि करत रस बात ।
रस बस लपटे चटपटे एक रूप दरसात ॥
एक रूप दरसात घटा जनु दामिनि प्रविसी ।
अङ्ग २ छहरात छटा छवि सुखमा विकसी ॥
सुकवि सुमति सकुचाति कहत छवि न्यारी न्यारी ।
'मधुर मंजरी' श्याम किधौं सुन्दर सिय प्यारी ॥११६

ललकि ललकि अधरान रस पीवत मनन अघात ।
मद माते राते युगल नयन बयन दरसात ॥
नयन बयन दरसात रूप मधुरी इतराते ।
पगे परस्पर प्रेम प्रीति हँसि हँसि बतराते ॥
सुठि अंगन छहरात सखि सुछवि माधुरी छलकि ।
पुलकित ह्वै मृदु गात सुख भूलत दोऊ ललकि ॥११७

॥ शरद सुखमा ॥

सरद प्रधानी चाँदनी दानी रति रस रैन ।
राम प्रिया जानी जगत पटरानी छवि ऐन ॥

पटरानी छवि ऐन सकल सुखमा सुख खानी।
चतुर सयानी शील सुधा सानी वर वानी॥
मद मानी पानी करत ज्ञान गुमानी गरद।
बिहरत 'मधुरी' सखिन संग सरसानी क्या सरद।११८

सरद यामिनी कामिनी मन भावनी स्वरूप।
नभ अम्बर भूषण नखत किये शृङ्गार अनूप॥
किये शृङ्गार अनूप चमक दमकनि उजियारी।
उद्दीपन रस करति रमावति रसिक विहारी॥
सखिन बृन्द युग चन्द मदन सुखमा छवि गरदा।
'मधुरी' रस की खानि नागरी नवला सरदा॥११९

सरसी सरस विलासता सरद जरद ऋतुराज।
'मधुरी' निरखि विकासिता ब्योम बस्यो द्विजराज॥
ब्योम बस्यो द्विजराज छीन सब कला जोह्वाई।
मरद गरद मद मदन अतन तन धर्‌यो लजाई॥
सखियन हृदय हुलास रहस रस रागन बरसी।
नटवर बेष बनाय पिया प्यारी छवि सरसी॥१२०।

बिलसी रसदा चाँदनी सरद सुहावनि रैन।
नैन चाव चमकात चित रसिक चकोरिन नैन।
रसिक चकोरिन नैन मैन उद्दीपन कीना।
रसिकराज सिरताज बेष नटवर रस भीना॥

सखी मृदंग बजाय गाय नाचैं मन हुलसी ।
'मधुरी' अंशन धरे छटा अद्भुत छवि बिलसी ।। १२१

सुखमा सरसी सरद की रास रच्यो रघुचन्द ।
विमल अकाश प्रकाश निधि परि पूरण रसचन्द ।
परि पूरण रस चन्द रसिक जन आनँद पाते ।
सिय पिय मिलि संगीत गीत गति गुन दरसाते ।।
नव शत सजे शृङ्गार 'माधुरी' रहित सु उपमा ।
छमकि छबीली छैलछिटकि छवि छहरतिसुखमा १२२

राका शाका विशद वर गावैं संत सुजान ।
चख चकोर रसिकन सुखद प्रेम उदधि उमड़ान ।।
प्रेम उदधि उमड़ान रहत कैसेहुँ नहि रोके ।
रच्यो विचित्र वितान रास मंडल रस ओके ।।
नृत्यत युगल किशोर वेष नटवर वर बाँका ।
'मधुरी' लै लै तान छके रस रूप सु राका ।।१२३

परिशिष्ट-भाग

कल्यानाकर कामदा चन्द्रकला वर नाम।
कल्पलता लावण्यता रूप रमावति श्याम ॥
रूप रमावति श्याम हार रघुबर उर केरी।
रहस केलि रस बात गुप्त प्रीतम उर प्रेरी ॥
पिय प्यारीं सुख देति सखी 'मधुरी' लै नाना।
जीव पीव संयोग करति सब विधि कल्याना ॥१२४

जय जय जय नृप बालिका प्रेम पालिका सीय।
रसिया राम विहारिणी रमत रमावत पीय ॥
रमत रमावत पीय चारु चित रसिक फन्दिनी।
शिव विरंचि हरि आदि शक्ति सुर ईश वन्दिनी ॥
उद्भव चौविस ईश रुचिर रेखा शुचि वर चय।
वन्दौंपद अरविन्द भनत 'मधुरी' जय जय जय ॥१२५

सीता शीत निवारतीं भव भीता हरि लेतु।
गीता काज सँवारतीं सुख देतीं निरहेतु ॥
सुख देतीं निरहेतु दोष दुख दल को दरतीं।
करतीं प्यार सु तोष मोद मंजुल हिय भरतीं ॥
ढरतीं अपनी ढरनि मिलावति 'मधुरी' मीता।
पावन परम सुनाम रटौ रसना नित सीता ॥१२६

बेनी बिमल विकासिती रस अनुराग सोहाग ।
प्रीतम प्रेम प्रमोद प्रद अमल सु अचल अदाग ॥
अमल सुअचल अदाग लहत सुचि रसिक सुसन्ता ।
दरसन परसन किये सकल कलि कलुष हनन्ता ॥
सुख की श्रेनी 'माधुरी' चारु चार फल देनि ।
सोहत सुन्दर सीय के शीश सुभग वर बेनि ॥१२७

सुभग चन्द्रिका सिया की सरद चन्द द्युति मन्द ।
चतुर चकोरी चारु चख प्रीतम लहत अनन्द ॥
प्रीतम लहत अनन्द कन्द कछु कहत बनैना ।
सुख सुखमा को स्वाद सु जानत राजिवनैना ॥
'मधुरी' छवि को जाल लाल मन मनहुँ फन्दिका ।
चित चोरनि चालाँक बाँक सिरसुभग चन्द्रिका ॥१२८

राम पियारी प्रेम की पावन परम सुखानि ।
राम रमावति रस भरी रहस रंग रस दानि ॥
रहस रंग रस दानि छबीली छवि में छाकी ।
अंग अंग छहरात छटा छवि छैल छलाकी ॥
शोभा सुखमा ऐन 'माधुरी' मैन सँवारी ।
प्रीतम नैन चकोर चन्द मुख राम पियारी ॥१२६॥

प्यारी रूप उजागरी प्यारी पिय की हार ।
प्यारी बसत सु हृदय में प्यारी प्राण अधार ॥

प्यारी प्राण अधार सार सरबस सुख प्यारी।
प्यारी नलनी नवल नैन को तारी प्यारी॥
प्यारी स्वातीं पिया पपिहरा रटत सु प्यारी।
प्यारी 'मधुरी' श्याम बढ़त चित कढ़त न प्यारी॥१३०

प्यारी रसदा रसवती प्यारी रस सुख ऐन।
प्यारी रति रस बर्द्धिनी प्यारी राका रैन॥
प्यारी राका रैन रसेशा रामा प्यारी।
प्यारी रमणी रमण रमावत रस निधि प्यारी।
प्यारी प्रेमा परा रूप मनरंजन प्यारी।
प्यारी 'मधुरी' राग भाग भल भाजन प्यारी॥१३१

प्यारी सुऋतु सोहावनी प्यारी पतियाँ वेलि।
प्यारी कलियाँ सुमन की प्यारी अलियाँ केलि॥
प्यारी अलियाँ केलि छटा छिटकी विधु प्यारी।
प्यारी बींन नवींन रागनी झीन सु प्यारी॥
प्यारी सारी सुभग किनारी तारी प्यारी।
प्यारी धारी अंग पिया 'मधुरी' मन प्यारी॥१३२

प्यारी प्यारी प्राण को प्रीतम चित हित दैन।
प्यारी मूरति 'माधुरी' प्यारी चितवनि सैन॥
प्यारी चितवनि सैन रसीली अँखियाँ प्यारी।
प्यारी बतियाँ मधुर सुधा सी लागै प्यारी॥

प्यारी प्रीति पयोधि पिया पूरण विधु प्यारी ।
प्यारी हिया उमंग तरंगै 'मधुरी' प्यारी ॥१३३

प्यारी मूरति 'माधुरी' प्यारी सुखमा खानि ।
प्यारी उपमा रहित छवि प्यारी पिय हित दानि ॥
प्यारी पिय हित दानि रहस रस अग्रज प्यारी ।
प्यारी क्षीन नवीन पीन पावन रति प्यारी ॥
प्यारी सरद सुचन्द उज्यारी वारी प्यारी ।
प्यारी 'मधुरी' चसक रसिक रमणी सिय प्यारी ॥१३४

प्यारी कुंज गुलाब की प्यारी लता लवंग ।
प्यारी फूली मालती प्यारी कदली पुंग ॥
प्यारी कदली पुंग कल्प तरु वल्ली प्यारी ।
प्यारी बकुल कदम्ब अम्ब चाँदनी सु प्यारी ॥
प्यारी क्यारी सुमन पुंज अलि गुंज सु प्यारी ।
प्यारी चन्द्रकलादि संग में विलसति प्यारी ॥१३५॥

प्यारी मधुर रसालिका प्यारी पावन रूप ।
प्यारी शोभा सींव छवि प्यारी परम अनूप ॥
प्यारी परम अनूप सिरोमनि सती सु प्यारी ।
प्यारी सुन्दरि भाग्य समर्पित निज-सुख प्यारी ॥
प्यारी रहसाचार्य चतुर चूड़ामणि प्यारी ।
प्यारी कोक कलान पंडिता दत्त सु प्यारी ॥१३६॥

प्यारी लता प्रमोद वन प्यारी द्रुमन कतार ।
प्यारी पतियाँ 'माधुरी' प्यारी कलियाँ डार ॥
प्यारी कलियाँ डार भार झूमी छवि प्यारी ।
प्यारी कुहकति कलित कोकिला कारी प्यारी ॥
प्यारी ऋतुपति साज सँवारी मदन कि प्यारी ।
प्यारी प्रीतम काज नई फुलवारी प्यारी ॥१३७॥

प्यारि सुडारी नेह तरु प्यारी छइहौं सीत ।
प्यारी डोरी रस कसी प्यारी पटली प्रीति ॥
प्यारी पटली प्रीति रची 'मधुरा' रुचि प्यारी ।
प्यारी पिय की अंक बैठि झूलति सिय प्यारी ॥
प्यारी फुलवारी हरित होय सु दरसी प्यारि ।
प्यारी अँखियाँ पुलकिरस सींचत प्रीतम प्यारि ॥१३८

प्यारी विकसीं कुमुदिनी प्यारीं सरद सु चन्द ।
प्यारी रास हुलास भरि प्यारी सखियन वृन्द ॥
प्यारीं सखियन वृन्द मृदंग सुबाजत प्यारी ।
प्यारीं गति संगीत ताल लय धारीं प्यारी ॥
प्यारी पाग सुशीश चन्द्रिका कलँगी प्यारी ।
प्यारीं नटनि सु वेष नटत नटवर गति प्यारी ॥१३६

प्यारीं कलिका कमल की प्यारी सरस सुवास ।
प्यारी हास हुलास रस प्यारी विमल विलास ॥

प्यारी विमल विलास रास मतवारी प्यारी ।
प्यारी बस पिय देखि मान करि बैठी प्यारी ॥
प्यारी हेतु सुजान तान पिय गावत प्यारी ।
प्यारी भुजा पसारि मिली 'मधुरी' हँसि प्यारी ॥१४०

प्यारी नवल सुनायिका प्यारी प्रीति प्रवीन ।
प्यारी प्रीतम बस करी प्यारी पिया अधीन ॥
प्यारी पिया अधीन नवल नायक वय प्यारी ।
प्यारी प्रीतम तत्व एक छवि न्यारी प्यारी ॥
प्यारी कुशला केलि कला कल 'मधुरी' प्यारी ।
प्यारी जीवन जान सजीवन प्राण सु प्यारी ॥ १४१

मधुरी सेज सुखेन दोउ करत कलोल अमोल ।
लोल बोल चंचल चखन मैन मीन बिधु डोल ॥
मैन मीन बिधु डोल किधौं सुठि हंसी हंसा ।
धरे मनोहर रूप पुजावहिं निज निज मंसा ॥
लज्जत अमित रति कन्त भिरत जनु भ्रमरा भ्रमरी ।
तल्प पराग सुराग भोग भोगत सुख 'मधुरी' ॥१४२

बाग बसे अनुराग युत सद्गुरु कृपा अदाग ।
धर्म दास मति मान की लगन नवेली लाग ॥
लगन नवेली लाग प्रिया प्रीतम तरु अरुझे ।
सुरझे रंच न नेक वासना जग को सुरझे ॥

संग किशोरी नित रहै रटै नाम बड़ भाग ।
'मधुरी' सुखमा सदनजनु सुखद सुभग वर बाग ॥१४३

राम नाम रसखानि है रसिक रमन रस रूप ।
राम रहित रस अरस है यथा प्रजा बिनु भूप ॥
यथा प्रजा बिनु भूप जीव बिनु जैसे देही ।
नदी बिना जल जान नेह बिनु यथा सनेही ॥
तथा सार सब रसन को जीवन को बिश्राम ।
रसना रटिए 'माधुरी' सियाराम सियराम ॥१४४

राम नाम में रमत हैं ब्रह्म चराचर जीव ।
सुमन सुगंध सु दूध घृत भीतर बाहर पीव ॥
भीतर बाहर पीव वृक्ष बीजान्तर जैसे ।
अग्नि दारु विधु सीत तेज रवि जानौ ऐसे ॥
राम रमावत 'माधुरी' रमुक्रीड़ा अभिराम ।
यहि विधि श्रुति सिद्धान्त है घञ प्रत्यय से राम ॥१४५

राम नाम आधार से धरा धरत शिर शेष ।
निसिदिन सुमिरन करत हैं शारद शम्भु गणेश ॥
शारद शम्भु गणेश दिनेश निसेश सु ध्यावैं ।
नारद शुक सनकादि रमापति सुमन रमावैं ॥
सुरतरु छाँह बिहाय कै सहत घोर घन घाम ।
प्रथमै गुरुपद नाय शिर 'माधुरी' भजु सियराम ॥१४६

राम नाम राकेस शत स्रवत सुधा रस धार।
पियत जियत नित रसिक जन मनहुँ चकोर कुमार॥
मनहुँ चकोर कुमार हृदय कुमुदिनि सी फूलैं।
तिमिर तरुण तर तमी तपनि तन त्रय की भूलैं॥
जपत जीह मंगल बढ़त होत अमंगल छाम।
'मधुरी' मन मंदिर बसौ मेरे रामा राम॥ १४७॥

राम पदारथ चारि है परमारथ को सार।
जानि यथारथ जीह जपु तजि भव भार विकार॥
तजि भव भार विकार जार पन टार सु दीजै।
पहिर प्रेम पन हार पतिव्रत को यश लीजै॥
भामिनि भक्ति शृङ्गार पर पारस परम ललाम।
नाम दाम जपु 'माधुरी' सुब्रह शाम सियराम॥१४८

मुक्ति सुतिय वर सुन्दरी राम नाम तार्टक।
सुठि सौभाग्य सोहाग को सूचक सदा अशंक॥
सूचक सदा अशंक पंख पर पद पहुँचावन।
योग क्रियादिक जानु यथा पत्ती मन भावन॥
रसना रटत सुनाम रस लहत सु 'मधुरी' मुक्ति।
नाम रहित जियजानि ये विधवा पन सब मुक्ति।१४९

राम सिया रसना रटौ रसिकन को यह काम।
काम वाम दुख दाम में बहौ न आठौ याम॥

बहौ न आठौ याम चाम की सेवा त्यागौ।
शाम सुबह सिय श्याम नाम अभिराम सु पागौ ॥
'मधुरी सुरति समेटिये वा गुन धामन धाम।
काम सयानो है यही भजिये रामा राम ॥१५०

राम नाम के रटन बिन जरनि न जाय हमेश।
ताते निसिदिन जपत हैं सादर सहित महेश ॥
सादर सहित महेश उमा को यही सिखावत।
सहस नाम सम जानु राम परतम श्रुति गावत ॥
सिगरी आस बिहाय कै 'मधुरी' रटु निष्काम।
करत कान्ति सुखशान्ति नितहरतभ्रान्तितमराम।१५१

चिन्ता चित में चौगुनी लगी रहै दिन रात।
सिया रटन रसना करो नातरु आयु सिरात।
नातरु आयु सिरात बाम सुत काम न अइहैं।
चारि दिना को नेह अंत में संग न जइहैं ॥
परमारथ पथ हानि सर्व स्वारथ के मिन्ता।
धन्य सुजनजन जौन'माधुरी' लागि सुचिन्ता।१५२

चिन्ता चित बिच राखिये जौ लौं सुख प्रद प्रान।
स्वामिनि सीय ललाम लव लगी रहै गुन गान ॥
लगी रहै गुन गान नाम नित जपौ सुजीहा।
निदरि नेह नद नीर निबहु नव नेह पपीहा ॥

धृक धृक 'मधुरी' बुद्धि असुख को सुखकरि गिन्ता ।
धन्य जगत नरनारि जाहि नित लगी सुचिन्ता ॥१५३

खटका खौफ न खोइये खबरदार खुद मान ।
दार प्यार परिवार को सुख इत तन धन जान ॥
सुख इति तन धन जान देखिये दृग दिल खोले ।
अवध अराम सुधाम त्यागि इत उत जनि डोले ॥
सिय प्यारी पद चिन्ह चित्त 'मधुरी' नित अटका ।
धन्यजगत जनजाहि यजन अरु भजनकी खटका।१५४

सीताराम सुमार जग जानौ सकल असार ।
ताते सुरति समेटि सब कीजै नाम उचार ॥
कीजै नाम उचार विचार सुचारु यही है ।
याते सुगम उपाय सुसाध्य समर्थ नहीं है ॥
कलि करनो सब कठिन है सरत न एकौ काम ।
सकल सिद्धि प्रद 'माधुरी' जगमें सीताराम ॥१५५॥

श्यामा श्याम सुकाम तरु अभिमत फल दातार ।
धर्म मूल सब शूल गत पाप प्रनासन हार ॥
पाप प्रनासन हार सु पावन ते पर पावन ।
योग यज्ञ व्रत सार 'माधुरी' मुनि मन भावन ॥
सम्बल सरस मुमुक्षु को परम धाम विश्राम ।
करुणाकर कल्याण प्रद भजिये श्यामा श्याम ॥१५६

योग युक्ति को छोड़िके रटिये श्यामा श्याम।
खटका राखौ भजन की नसै कामना काम ॥
नसै कामना काम भक्ति के अँग रँग बाढ़ैं।
पढ़ि सुनि करि सत्संग सार सत ग्रन्थन काढ़ैं ॥
अमल अमल बिन जगत के मिटै नहीं सब सोग।
लहत न स्वपनेहु 'माधुरी' बिना रसिक संयोग ॥१५७

श्याम मनोहर सहज ही सुखमा अंग अपार।
निरखि बदन छवि 'माधुरी' बिसरयो ब्रह्म विचार ॥
बिसरयो ब्रह्म विचार तत्व मसि तत्व पिछानो।
योग ज्ञान तप सार सु सुख सरवस रस जानो ॥
अखिल ईश ईशन सुपति जिय जीवन विश्राम।
सर्बदिशि ते मुख मोरिकै लखुछवि श्यामाश्याम ।१५८

सारी छवि जग नायिका नायक एक श्रीराम।
रमत रमावत रूप में रमु क्रीड़ा रस धाम ॥
रमु क्रीड़ा रस धाम मुनिन मति रति अभिलाषी।
चितवनि चित हरि लेति अनूठी अद्भुत आँखी ॥
कंज खज झख मार मृगा उपमा सब हारी।
सुखमा 'मधुरी' देखि बिहठि मन ब्रह्म बिसारी ॥१५९

राम रमावत रमत हैं रच्छा करैं हमेश।
ताते निर्भय रहत जन पावैं सुख सुविशेष ॥

पावैं सुख सुविशेष लेश नहिं देश कलेशा।
रसु क्रीड़ा शुभ चातु धारु सद्गुरु उपदेशा॥
योगी यस्मिन् रमै नित तजि ममता मद काम।
लीलारूप सु 'माधुरी' नाम धाम अभिराम॥१६०।

पुरुष परात्पर प्रकृति पर पावन अमल अतीव।
पीव नित्य सुख सींव हैं बध्य मलिन तर जीव॥
बध्य मलिन तर जीव घीव बिनु गोरस जैसै।
सुरसरि बिलग सुनीर अपावन जानो ऐसे॥
बिना शरण सिय लाल सहत नाना दुख मूरख।
सद्गुरु कृपा कटाक्ष मिलैं 'मधुरी' वर पूरुष॥१६१।

राम अमित ब्रह्मांड को एक अखंड सु भूप।
मारतण्ड वरखण्ड से परम प्रचंड अनूप॥
परम प्रचंड अनूप तिमिर अज्ञान विनासी।
मुक्ति भुक्ति रस युक्ति भक्ति भज भाव प्रकासी॥
दिव्य कलाकर एकरस निरमल गुण गण ग्राम।
दूषण भूषण करत हैं 'मधुरी' भूषण राम॥ १६२॥

काँचा ढाँचा में परे राँचा मन गृह बीच।
नाचा नकली नाच नित निपट नगीचहिं मीच॥
निपट नगीचहिं मीच मीत साँचा जो पाऊँ।
रोम रोम पुलकाय हृदय से हरसि लगाऊँ॥

खाँचा रेखा सत्य नाम वेदन में बाँचा।
बाँचा 'मधुरी' सोय तजा जो नाता काँचा ॥१६३

सच्चा आपन सब कहै सच्चा भया न कोय।
सच्चा कहिये ताहि को सद्गुरु बच्चा होय॥
सद्गुरु बच्चा होय शीश संतन पद लच्चा।
रसिकराज रति राग रहस रंगन में रच्चा॥
मिथिला अवध बिहाय द्रव्य हित मरि मरि पच्चा।
बिना प्रीति प्रतीति भजन 'मधुरी' नहिं सच्चा॥१६४

कौवा बगरे जगत महँ काँव काँव चिल्लायँ।
हंस सुमानस छाँड़ि कै कहौ सखी कहँ जायँ॥
कहौ सखी कहँ जाँय बात नहिं कोउ बुझउवा।
कंक स्वान बक चील्ह भक्ष आभक्ष खवउवा॥
सन्त हंस उर बिमल 'माधुरी' सुथल बसउवा।
धन्य सखी वह देश जहाँ पहुँचत नहिं कौवा।१६५

हाथी सन्त सुमार्ग में चले जात मदमत्त।
मूरख कूकुर देखि कै भूँकत हैं अलबत्त।
भूँकत हैं अलबत्त दूरि ते निकट न आवैं।
सठ करनी कर भोग सुघर घर दंडा पावैं॥
'मधुरी' बदत विचारि बैन सुनिये मम साथी।
सोय भजन मदमत्त धन्य हैं सन्त सु हाथी॥१६६॥

मिथिला नाते त्यागि कै करते विविध उपाय।
जरते मरते जगत में परते निरय निकाय ॥
परते निरय निकाय चैन छनहूँ नहिं पाते।
माते मदिरा मोह वृथा ही जन्म गँवाते ॥
योग यज्ञ तप दान भये 'मधुरी' सब शिथिला।
सिगरी आस विहाय भजौमन मिथिला मिथिला॥१६७

नाते मिथिला छोड़ि के अपर ईश को ध्यान।
जग में भरमत फिरत शठ पामर पशू समान ॥
पामर पशू समान भार लादे शिर खरवत।
बिना सिया रति राग वृथा हीं जिय को जरवत ॥
राघवेन्द्र रसिकेन्द्र सदा 'मधुरी' गुन गाते।
रहस रीति जो चहौ लहौ मिथिला के नाते ।।१६८

प्रिया बिना संसार में जीव जिया नहिं कोय।
प्रेम बिया बोये बिना हरित हिया नहि होय ॥
हरित हिया नहि होय बिना 'मधुरी' नटनागर।
कृपा किया रसिकेन्द्र दिया सम्बन्ध उजागर ॥
तत्सुख सुखी प्रधान रूप पायो शुचि सखिया।
स्वकिया सनी सनेह मधुर मधु मानो सुप्रिया ॥१६९।

मोर नैन चातक भये स्वाती युगल किशोर।
चहत न चित हित और से ठौर ठौर नहिं और ॥

ठौर ठौर नहि दौर रटत नित नाम सु जीहा।
प्रीतम प्राण अधार प्रेम पन सरस सु ईहा॥
सजल श्याम दामिनि सिया छटा छटा घनघोर।
निरखि सुखुखमा 'माधुरी' नचत मौर मन मोर॥१७०

पूरव के आचार्य जो अग्र निवासी ख्यात।
सन्मुख तिनके अर्पते भणित भदेस लजात॥
भणित भदेस लजात बात 'मधुरी' मन आवत।
सरल सुशील सुभाव ससुझि निज जन अपनावत॥
सिय प्यारी पिय रसिक सुसन्तन रीति अपूरव।
पुनि पुनि करौं नमामि समर्पयामि कवि पूरव।१७१

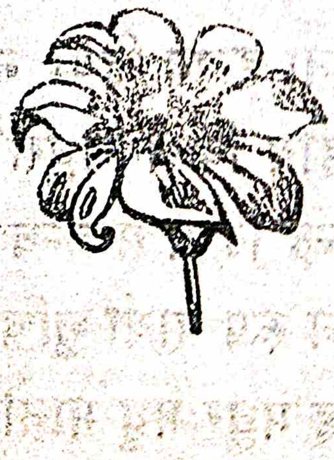

सिद्धान्त

नाते मिथिला छोड़ि के अपर ईश को ध्यान ।
जग में भरमत फिरत शठ पामर पशू समान ॥
पामर पशू समान भार लादे शिर खरवत ।
बिना सिया-रति-राग वृथा ही जियको जरवत ॥
राघवेन्द्र रसिकेन्द्र सदा 'मधुरी' गुन गाते ।
रहस रीति जो चहौ लहौ मिथिला के नाते ॥

श्रीहनुमत् प्रेस, श्रीअयोध्याजी ।